Topic 29

समासान्त — 1

तत्पुरुषस्याऽङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः ।

संख्याव्ययादेरङ्गुल्यन्तस्य समासान्तोऽच् स्यात् । द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य- द्व्यङ्गुलम् । निर्गतमङ्गुलिभ्यः - निरङ्गुलम् ।

जिस 'तत्पुरुष' के आदि में संख्यावाचक या अव्ययवाचक शब्द और अन्त में 'अङ्गुलि' शब्द हो, उससे परे समासान्त 'अच्' प्रत्यय होता है। उदाहरण के लिए अङ्गुली प्रमाणमस्य - इस विग्रह में तद्धितार्थ से द्वे का 'अङ्गुली' के साथ समास हो। द्वि ~~अङ्गुली~~ अङ्गुलि रूप बनता है। यह तत्पुरुष समास है। इसके आदि में संख्यावाचक 'द्वि' है और अन्त में 'अङ्गुलि शब्द'। अतः प्रकृत सूत्र से इससे परे अच् प्रत्यय हो। द्वि अङ्गुलि अ' रूप बनेगा। तब 'अङ्गुलि' के इकार का लोप और यणादेश आदि हो। द्व्यङ्गुलम् रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार 'निर्गतम् अङ्गुलिभ्यः' (अंगुलियों से निकला हुआ,

- इस विग्रह में अव्ययवाचक 'निर्' का 'अङ्गुलिभ्यः' के साथ समास होकर 'निर् अङ्गुलि' रूप बनने पर 'अच्' प्रत्यय हो 'निरङ्गुलम्' रूप बनता है।

अहः- सर्वैकदेश-संख्यात-पुण्याच्च रात्रेः। एभ्यो रात्रेश्च स्यान्चात् संख्याव्ययादेः अहर्ग्रहणं द्वन्द्वार्थम्।

द्वन्द्व समास में 'अहन्' (अहन् - दिन) के पश्चात् और तत्पुरुष समास में सर्व, एकदेश, संख्यात (गिना हुआ) तथा पुण्य के पश्चात् रात्रि शब्द से समासान्त 'अच्' (अ) प्रत्यय होता है। सूत्र में 'च' कहने से संख्यापूर्वक और अव्ययपूर्वक रात्रि से भी समासान्त अच् प्रत्यय होता है। उदाहरण के लिए 'अहश्च रात्रिश्च' (दिन और रात) - इस विग्रह में 'अहः और रात्रिः' का द्वन्द्व समास हो 'अहन् रात्रि' रूप बनता है। यहाँ द्वन्द्व में 'अहन्' के बाद 'रात्रि' शब्द आया है, अतः प्रकृत सूत्र से समासान्त 'अच्' (अ) प्रत्यय हो 'अहन् रात्रि अ' रूप बनेगा। तब इकार-लोप और नकार को उत्व होकर 'अहोरात्र' रूप बनने पर 'स नपुंसकम्' से नपुंसकलिङ्ग

प्राप्त होता है।

राजाऽहःसखिभ्यष्टच् ।

एतदन्तात् तत्पुरुषात् टच् स्यात् । परम राजः

यदि तत्पुरुष के अन्त में राजन्, अहन् और सखि शब्द हो तो उससे समासान्त 'टच्' (अ) प्रत्यय होता है। उदाहरण के लिए (परमश्च असौ राजा च, श्रेष्ठ राजा) - इस विग्रह में 'परमः' का 'राजा' के साथ तत्पुरुष समास हो 'परम राजन्' रूप बनता है। यहाँ 'राजन्' अन्त में होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'अच्' प्रत्यय हो 'परम राजन् अ' रूप बनेगा। तब टि-'अन्' का लोप हो विभक्ति कार्य होकर 'परमराजः' रूप बनता है। इसी प्रकार 'अहन्' अन्त में होने पर 'उत्तमाहः' (उत्तम दिन) आदि और 'सखि' अन्त में होने पर 'परमसखः' (श्रेष्ठ मित्र) आदि रूप बनते हैं।

अह्नष्टखोरेव एतयोरेव परतोऽह्नष्टि लोपः स्यात्, नान्यत्र। उत्तमाहः। द्वे अहनी भृतो द्व्यहीनः क्रतुः। तद्धितार्थे द्विगुः। 'तमधीष्टः' - इत्यधिकारे 'द्विगोर्वा' इत्यनुवृत्तौ 'रात्र्यहस्संवत्सराच्च' इतिखः

लिङ्गविशिष्टपरिभाषया ओत्वान्नेह - मद्राणां राज्ञी मद्रराज्ञी।

अह्नोऽह्न एतेभ्यः। सर्वादिभ्यः परस्याहन्शब्दस्याह्नादेशः स्यात् समासान्ते परे।

अह्नोऽदन्तात्। अदन्तपूर्वपदस्थाद्रेफात्परस्याह्नादेशस्य नस्य णः स्यात्। सर्वाह्णः। पूर्वाह्णः। संख्याताह्नः। द्वयोरह्नोर्भवः, (कालाट्ठञ्। द्विगोर्लुगनपत्ये इति ठञो लुक्) द्व्यह्नः। (क्रियाभेदन्तत्वाट्टाप्) द्व्यह्ना। द्व्यह्नप्रियः। अत्यह्नः।

क्षुभ्नादिषु च। एषु णत्वं न स्यात्। (दीर्घाह्नी प्रावृडिति। दृष्टौ प्रावृट्शब्दः स्त्रीलिङ्गः) दीर्घाह्नी प्रावृट्। एवं चैतदर्थमह्न इत्यदन्तानुकरणक्लेशो न कर्तव्यः। (प्रातिपदिकान्त — इति णत्वविकल्पस्तु) क्षुभ्नादिषु पाठस्यावश्यकत्वात्। अदन्तादिति तपरकरणान्नेह - परागतमहः पराह्णः